

Chapter 12

Question: Is it true that the lunar eclipse affects our life? If it does, why is it so?

Krishnamurti: If you are a lunatic, if you are a little touched in the head, it may affect you. But I do not see otherwise how it can.

This question opens up the problem of superstition. You live in a society, among religious people, who say, 'The lunar eclipse affects the mind.' They have got all kinds of theories and you are brought up on them. You see how all these pilgrims, thousands of them, gather and bathe at the Sangam and in the Ganga. When thousands of people think about something, there is an atmosphere created, is there not? In that atmosphere, in that activity, the child watches and is impressed. When you are young, the mind is sensitive like a photo plate that absorbs. That is why the kind of atmosphere you live in is very important. But we do not pay attention to all this. We live in this chaotic, dark, miserable world in a superficial way. You hear old people say, 'The lunar eclipse affects your life,' and you accept. You do not question, you do not think for yourself.

To think simply is very difficult because the mind is not simple, the mind invents, it creates every kind of illusion, mystery, and it gets caught in that. To have a simple mind is really to understand the complexity of life. You cannot merely deny the complexity of life and say, 'I have a simple mind.' A simple mind is not a thing to be

प्रश्न : क्या यह सच है कि चंद्र-ग्रहण हमारे जीवन को प्रभावित करता है? यदि करता है तो ऐसा कैसे होता है?

कृष्णमूर्ति : यदि आप विक्षिप्त हैं, यदि आपके दिमाग में कोई गड़बड़ी है तो यह आपको प्रभावित कर सकता है। परंतु मुझे इसके अलावा ऐसी कोई वजह नज़र नहीं आती कि यह आपको कैसे प्रभावित कर सकता है।

यह प्रश्न अंधविश्वास की समस्या को खोलकर सामने रखता है। आप किसी ऐसे समाज में, उन धार्मिक लोगों के बीच रहते हैं, जो कहते हैं, 'चंद्र-ग्रहण मस्तिष्क को प्रभावित करता है।' उनके पास इस बारे में ढेर सारे सिद्धांत हैं और आप उनके बीच रह कर बड़े हुए हैं। आप जानते ही हैं कि तीर्थयात्री, हजारों ऐसे लोग संगम पर एकत्रित होते हैं, और गंगा नदी में स्नान किया करते हैं। जब हजारों लोग किसी एक धारणा से प्रेरित हो कर कोई कार्य कर रहे हों तो आस-पास के लोग भी उस बारे में सोचने लगते हैं। ऐसा होता है न? उस वातावरण में, उस गतिविधि के बीच, बच्चा सब कुछ देखता है और उससे प्रभावित होता है। जब आप बहुत छोटे होते हैं तो आपका मन उस फोटो-फिल्म सा संवेदनशील होता है जो आस-पास के प्रभावों को तत्काल ही ग्रहण कर लेता है। यही वजह है कि आप किस वातावरण में रहते हैं इसका बहुत महत्त्व है। पर हम इन बातों पर ध्यान ही नहीं देते। इस अराजकता भरे, अंधकारमय, विषाद भरे संसार में हम बहुत सतही स्तर पर जीते रहते हैं। आप बूढ़ों के मुंह से सुनते हैं, 'चंद्र-ग्रहण तुम्हारे जीवन पर असर डालता है', और आप उसे मान लेते हैं। आप इस पर सवाल नहीं उठाते, आप स्वयं खोज कर इसका पता नहीं लगाते।

सीधे-सरल ढंग से चिंतन करना बहुत कठिन होता है क्योंकि मन सरल नहीं होता है, मन कल्पनाएं कर लेता है, यह हर प्रकार के भ्रम पाल लेता है, रहस्य निर्मित कर लेता है और फिर उनके बीच फंस जाता है। जीवन की जटिलता को नकार देने भर से आप 'मेरा मन सरल है' कहने के हकदार नहीं हो जाते। सरल मन कुछ ऐसा नहीं है जिसे आप प्रयास से विकसित कर सकें। जब आप अस्तित्व की जटिलता को समझने लगते हैं तो

Chapter 12

cultivated; it comes into being when you understand the complexity of existence.

Question: What is the goal of our life?

Krishnamurti: What is the significance of life? What is the purpose of life?

Why do you ask such a question? You ask this question when, in you; there is chaos, and about you there is confusion, uncertainty. Being uncertain, you want something to be certain, you want a certain purpose in life, a definite goal, because in yourself you are uncertain. You are miserable, confused; you do not know what to do. Out of that confusion, out of that misery, out of that struggle, out of those fears, you say, 'What is the purpose of life?' You want something permanent that you can struggle after, and the very struggle for a goal creates its own false clarity, which is only another form of confusion.

What is important is not what is the goal of life but to understand the confusion in which one is, the misery, the tears, and all the other things. We do not understand the confusion but only want to get rid of it. The real thing is here, not there. A man who is concerned does not ask what is the purpose of life. He is concerned with the clearing up of the confusion, of the sorrow in which he is caught. When that is cleared, he does not ask a question like this. You do not ask, 'What is the purpose of sunshine?' 'What is the purpose of beauty?' 'What is the purpose of living?' It is only when life becomes a misery,

अनायास ही इसका आगमन हो जाता है।

प्रश्न : हमारे जीवन का क्या उद्देश्य है?

कृष्णमूर्ति : जीवन की सार्थकता क्या है? जीवन का क्या उद्देश्य है?

आप इस तरह का प्रश्न क्यों पूछते हैं? आप यह प्रश्न तब पूछते हैं जब आपके भीतर अव्यवस्था हो, और आप संशयग्रस्त हों, अनिश्चय से घिरे हों। अनिश्चय की स्थिति में आप निश्चयपूर्ण होना चाहते हैं, आप जीवन में कोई सुनिश्चित लक्ष्य चाहते हैं, एक तय गन्तव्य चाहते हैं, क्योंकि अपने आपमें आप अनिश्चित हैं। आप त्रस्त हैं, दुविधा में हैं, आप नहीं जानते कि आपको क्या करना है। इस दुविधा के कारण, इस व्यथा के कारण, इस संघर्ष के कारण, इन भयों के कारण आप कहते हैं 'जीवन का क्या उद्देश्य है?' आप कोई ऐसी स्थायी चीज़ चाहते हैं जिसको पाने के लिए आप संघर्ष कर सकें और किसी ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप जो संघर्ष करते हैं वह एक मिथ्या स्पष्टता भी देता है जो कि बस एक तरह की भ्रांति ही है।

जीवन के उद्देश्य का पता लगाना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कि अपनी भ्रांति और संशय को, अपनी व्यथा और आंसुओं और उससे जुड़ी तमाम दूसरी बातों को समझना जिसमें मनुष्य फंसा हुआ है। हम इस भ्रांति को समझे बिना ही इससे छुटकारा पा लेना चाहते हैं। यथार्थ तो यहां है, कहीं और नहीं। जिसे इसका महत्त्व महसूस हो जाता है वह यह नहीं पूछता कि जीवन का क्या लक्ष्य है। वह भ्रांति को मिटाने के प्रति गंभीर होता है, वह उस दुख के निवारण की चिंता करता है जिसमें वह पड़ा है। जब वह दूर हो जाता है तो वह ऐसा कोई प्रश्न नहीं पूछता। आप यह कभी नहीं पूछते कि 'सूर्य के प्रकाश का क्या मतलब है?' या 'सौंदर्य का क्या मतलब है?' अथवा 'जीते रहने का ही क्या अर्थ है?' जब जीवन व्यथा से भर जाता है, एक अनवरत युद्ध बन जाता है और उस व्यथा से, उस युद्ध से आप जब पलायन

Chapter 12

a constant battle, and when you want to escape from that misery, from that battle, that you say, 'Tell me what is the aim of life.' Then you go after various people, migrate from one teacher to another, trying to find out what is the purpose of life. They will tell you; though they are equally foolish. You can only choose a guru who is as confused as you are, and from him you will get what you want.

If you can understand the confusion, the struggle, the misery, the deep longings that you have, then in that very understanding, you will find something about which you do not have to ask another.

Question: Why do we cry?

Krishnamurti: You know, there are tears of joy and tears of pain. The tears of joy are very rare. When you love someone, tears come to your eyes. But that is a very rare thing. It does not happen to us because we do not love. As we grow older, we become more and more serious. We know at least the seriousness of frustration, the seriousness of hopeless misery in life—the depths of which have not been seen, enjoyed, known. Most of us have shed tears—the little child and the old person. We know what those tears mean—the tears of pain, of losing something, of losing a person, of not having success, of not being happily married. We know all those things. But to understand and go beyond all that, to go beyond every thought, requires a great deal of insight.

Question: How can we deal with the unconscious?

करना चाहते हैं तो कहते हैं, 'जीवन का क्या उद्देश्य है मुझे बतलाएं'। तब आप अनेक लोगों के पास यह प्रश्न लेकर जाते हैं, भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक शिक्षकों के पास जाते हैं और यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि जीवन का लक्ष्य क्या है। वे आपको इस बारे में बताते भी हैं परंतु वे भी आप जैसे नासमझ होते हैं। आप ऐसे ही किसी व्यक्ति को अपना गुरु बना लेते हैं जो आप जैसा ही संशयग्रस्त होता है और उससे आपको वह सब प्राप्त हो जाता है जो आप पाना चाहते हैं।

यदि आप भ्रांति को, संघर्ष को, पीड़ा और अपने भीतर गहराई में दबी लालसाओं को समझ लें तो उस समझ के चलते आप कुछ ऐसा देख पाएंगे जिसके बारे में आपको किसी और से पूछने की ज़रूरत ही न होगी।

प्रश्न : हम रोते क्यों हैं?

कृष्णमूर्ति : आप जानते हैं कि आंसू प्रसन्नता के भी होते हैं और पीड़ा के भी होते हैं। प्रसन्नता के आंसू कभी-कभी ही आते हैं। जब आप किसी से प्रेम करते हैं तो आपकी आंखों में आंसू छलक आते हैं। पर ऐसा अक्सर नहीं होता। हमारे साथ ऐसा इसलिए नहीं होता क्योंकि हममें प्रेम होता ही नहीं है। जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं हम और भी गंभीर होने लगते हैं। असफलता और हताशापूर्ण व्यथा से उत्पन्न होनेवाली गंभीरता से तो हमारा परिचय हो ही जाता है--जिसकी गहराइयों की थाह हमने कभी नहीं लगाई, जिसे भोगा नहीं, जाना नहीं। छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध मनुष्यों तक--सभी ने आंसू बहाए हैं। हम जानते हैं कि उन आंसुओं का क्या मतलब है--पीड़ा के आंसुओं का, किसी प्रिय वस्तु या प्रिय व्यक्ति को खो देने के आंसुओं का, सफल न होने के आंसुओं का तथा वैवाहिक जीवन के सुखद न हो पाने के आंसुओं का। हम उन सारी बातों को जानते हैं। परंतु उन सबको समझकर उससे परे जा पाने के लिए बहुत अधिक अंतर्दृष्टि की ज़रूरत होती है।

प्रश्न : अचेतन के संबंध में हमें क्या करना चाहिए?

Chapter 12

Krishnamurti: This question has been put, not by a grown-up person, but by a child. A child does not know anything about the unconscious. All that he knows is playing a game, learning subjects, bullying people around him, feeling hunger and fear, and so on.

You are a child and you cannot watch much while you are young. But even if you watch a little, you will find that there are various things going on under the superficial ripples of your mind. Have you ever watched the river? You know, there is an astonishing life going on below the river, in the deeper depths. A Frenchman went down to a great depth under water and found astonishing life, fishes that you have never seen, colours that are utterly unimaginable, darkness that is incredible, silence that is impenetrable. But we know only the tiny ripples that ruffle the water, only the currents on the surface of the river. But if we go deeper—there are artificial ways of going deep down—then you can see the number of fishes, the variety of life, the strange happenings below the water.

In the same way, to see below the surface of the mind, below the ripples in it and all its activities, you must be capable of going deep down into the mind. It is important to know that the mind is not just the little layer of superficial activity, that you are not merely studying to pass examinations, not merely following some tradition in the matter of how you dress, doing puja, or anything else.

To go below the superficial

कृष्णमूर्ति : यह प्रश्न किसी बड़े व्यक्ति ने नहीं बल्कि एक बच्चे ने पूछा है। कोई भी बच्चा अचेतन के बारे में कुछ नहीं जानता। वह तो बस कुछ खेल आदि खेलता है, अपनी पढ़ाई से जुड़े विषयों को पढ़ता है, आसपास के लोगों के साथ शैतानी करता है, भूख, डर आदि महसूस करता है।

आप बच्चे हैं और इस उम्र में आप अभी बहुत कुछ नहीं देख पाएंगे। परंतु यदि आप थोड़ा भी ध्यान दें तो आप पाएंगे कि आपके मन की ऊपरी सतह से नीचे भी अनेक प्रकार की गतिविधियां होती हैं। क्या आपने कभी नदी को देखा है? आपको मालूम है कि नदी की सतह से नीचे, उसके गहरे तलों पर जीवन अद्भुत रूप से गतिशील है। एक फ्रांसीसी व्यक्ति जल की गहराई में अत्यंत नीचे तक उतरा और उसने वहां पर जीवन का आश्चर्यजनक रूप देखा, ऐसी मछलियां उसने वहां देखी जिन्हें मनुष्य ने इससे पहले कभी न देखा था, ऐसे रंग देखे जिनकी कल्पना तक हमें नहीं हो सकती, और ऐसा अंधकार देखा जो अविश्वसनीय था, एक ऐसा अभेद्य सन्नाटा वहां उसने महसूस किया। परंतु हम तो बस उन लहरों को ही जानते हैं जो पानी की सतह पर हलचल मचाती हैं, जल की सतह के प्रवाह को ही हम जान पाते हैं। किंतु यदि हम पानी की गहराई में जाएं—और वहां तक जाने के लिए कुछ विशेष वैज्ञानिक तरीके भी हैं—यदि हम उन तरीकों से वहां पहुंच सकें तो वहां हम कई प्रकार की मछलियां देखेंगे, जीवन के नाना रूप देखेंगे, जल की गहराई में होनेवाली अनोखी घटनाएं देखेंगे।

इसी तरह से, मन की सतह के नीचे क्या है यह देख पाने के लिए, इसकी तरंगों और सतह पर हो रही हलचल के नीचे क्या है यह जान सकने के लिए, आपको मन के भीतर बहुत गहरे तक जा पाने की सामर्थ्य जुटानी होगी। यह जानना बड़ा महत्वपूर्ण है कि मात्र ऊपरी तल पर हो रही सतही हलचल ही मन नहीं है; यह समझना भी ज़रूरी है कि आप केवल परीक्षाएं पास करने के लिए पढ़ाई नहीं कर रहे हैं, आप अपने पहनावे में, या पूजा-पाठ में या कुछ और करने में किन्हीं परंपराओं को ही नहीं ढो रहे हैं।

सतही गतिविधियों से नीचे, गहराई तक जा पाने

Chapter 12

activities, you must have a mind that can understand how to go deep. I think that is one of the functions of education, not to be merely occupied with the surface, whether it is beautiful or ugly, but to be able to go deep, like the diver with his diving dress, so that in the depths you can freely breathe, so that you can find out in those depths all the intricacies of life, the limitations, the fluctuations, the varieties of thoughts—because, in oneself, one is all that—and then go beyond all that, transcend all that.

You cannot go very deep if you do not know the surface of your mind. To know the surface, one has to watch; the mind has to watch the way one dresses, puts on clothes, puts on a sacred thread, does puja, and understand why. Then, you can go deep. But to go deep, you must have a very simple mind. That is why a mind that is held in conclusions, in condemnation, in comparison, can never go beyond its own superficial activities.

Question: How should we observe things?

Krishnamurti: What matters is not how you should observe but how you actually observe.

You do not know how to observe. Many people will tell you how; just to accept that would be silly. You have to find out how you actually look at things. Have you ever noticed how you look at things? How do you look at a tree? Do you look at it fully, or do you immediately give the tree a name, look at it casually, and wander

के लिए आपका मन इस योग्य होना चाहिए कि उस गहराई तक कैसे जाया जाता है, यह समझ सके। मेरे विचार से शिक्षा के कार्यों में से यह भी एक है कि मन के ऊपरी स्तर पर जो कुछ हो रहा है, भले ही सुंदर हो या भद्दा, आप केवल उसमें ही न उलझे रहें बल्कि गहरे स्तर तक जा सकें, जैसे कोई गोताखोर विशेष पहनावे का सहारा लेकर बहुत गहरे तलों तक जा पहुंचता है, ताकि उस गहराई में जाकर भी सहजता से सांस ली जा सके और अपनी खोजबीन जारी रखते हुए जीवन की समस्त जटिलताओं को, हदों को, उसके उतार-चढ़ावों को तथा विचारों की विविधता को जान सकें--क्योंकि व्यक्ति अपने आपमें यह सभी कुछ होता है--और फिर उस सबसे परे जा सकें, उस सबका अतिक्रमण कर जाएं।

यदि आप अपने मन की ऊपरी सतह को नहीं जानते हैं तो बहुत गहराई तक नहीं जा सकेंगे। सतह को जानने के लिए गहन निरीक्षण ज़रूरी है; हम कैसे कपड़े पहनते हैं, उन्हें किस ढंग से पहनते हैं, कैसे जनेऊ आदि धारण करते हैं, पूजा-पाठ वगैरा करते हैं, और ऐसा क्यों करते हैं - मन को इस सबका ध्यान से निरीक्षण करना होगा। इसके बाद ही आप गहराई में उतर सकते हैं परंतु गहराई तक पहुंचने के लिए आपके मन का बहुत सरल होना ज़रूरी है। इसीलिए जो मन निष्कर्षों से बंधा होता है, निंदा करने और तुलना करने में लगा रहता है, वह अपनी सतही गतिविधियों के परे कभी नहीं जा पाता।

प्रश्न : हमें अवलोकन कैसे करना चाहिए?

कृष्णमूर्ति : महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि आपको कैसे अवलोकन करना चाहिए, बल्कि यह है कि आप वस्तुतः अवलोकन करते कैसे हैं।

आप नहीं जानते कि अवलोकन कैसे किया जाता है। अनेक लोग आपको बता देंगे कि यह कैसे करते हैं, उसे मान लेना तो मूर्खता होगी। आपको स्वयं ही इसका पता लगाना होगा कि सच में आप चीज़ों को कैसे देखते हैं। क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि आप चीज़ों को किस तरह से देखते हैं? आप किसी वृक्ष को किस प्रकार देखते हैं? क्या आप उसे उसकी पूर्णता में देख पाते हैं, या आप उसे उड़ती निगाह से

Chapter 12

away? When you give it a name, your mind has already wandered away. If you look at a parrot, do you observe the red beak, the claws, the curious way it flies? Just watch, and as you watch, you observe and learn to see. The moment you say that bird is a parrot, your mind has already been distracted from observation.

We never look at anything freely, completely, because we do not observe it without comparing. We say, 'That bird is not as beautiful as the other bird,' 'That tree is not as tall or as magnificent as the other tree'; we also give it a name. The process of comparison is going on all the time. Only that mind which really looks can look without this process. That is how a thing has to be observed. When you hear it said that you should look without comparison, without naming, then you will struggle to look that way. But do not try to look that way. Just see how you look at a beautiful object, how you compare, how you judge. Just watch how your mind is always wandering, never fully looking. To look, the mind must be quiet, not wander, not be distracted.

January 19, 1954

देखकर तुरंत ही कोई नाम दे देते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं? जैसे ही आप उसे एक नाम दे देते हैं, आपका मन कहीं और जा चुका होता है। जब आप किसी तोते को देखते हैं, तो क्या आपका ध्यान उसकी लाल चोंच पर, उसके पंजों पर और उसकी उड़ान के अजीब तरीके पर जाता है? बस इसे ध्यानपूर्वक देखें भर, और जैसे-जैसे आप ध्यानपूर्वक देखने लगते हैं, आप अवलोकन भी करने लगते हैं, और यह सीख लेते हैं कि अवलोकन कैसे किया जाता है। जिस क्षण आप यह कहते हैं कि यह पक्षी तोता है, उसी क्षण आपका मन अवलोकन से हट कर कहीं और भटक जाता है।

हम किसी भी चीज़ को खुले मन से, समग्र रूप से नहीं देख पाते हैं क्योंकि हमें तुलना किए बिना देखना ही नहीं आता। हम कहते हैं, 'यह पक्षी उस दूसरे पक्षी के जैसा सुंदर नहीं है', 'यह वृक्ष उस वृक्ष की तरह ऊंचा या भव्य नहीं है', और हम इसे एक नाम भी दे डालते हैं। तुलना करने की प्रक्रिया निरंतर चलती ही रहती है। जो वास्तव में अवलोकन करता है, केवल वही मन इस प्रक्रिया से मुक्त रहकर देख पाता है। जब आपसे कहा जाता है कि तुलना से बाहर निकलकर देखें, नाम दिए बिना देखें, तो ऐसा सुनकर आप उस ढंग से देखने की कोशिश करने लग जाते हैं। किंतु उस ढंग से देखने के लिए आप कोई कोशिश न करें। केवल इस पर ध्यान दें कि आप किसी सुंदर वस्तु को कैसे देखते हैं, आप तुलना कैसे करते हैं, आप निष्कर्ष कैसे निकालते हैं। केवल इसका ध्यान रखें कि किस प्रकार आपका मन किसी भी वस्तु को पूरी तरह से देखें बिना ही सदा भटकता रहता है। देख पाने के लिए यह आवश्यक है कि मन निश्चल हो, भटक न रहा हो, कहीं और न हो।

१६ जनवरी, १९५४